सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : 32
अंक – 129 | अप्रैल – 2014

॥ ऊँ श्री साईनाथाय नमः॥

॥ ऊँ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः॥

: साधना सम्मेलन :

गुरू बंधुभगिनीयों से

पच्चीस साल दिन–रात परिश्रम करके अनेक लोगों का कामकाज कर उनके दुःख दूर करने मे बाद वंदनीय दादाजी ने पहला साधना सम्मेलन 1979 में शिरोड़ा, गोवा में लिया। फिर हर साल यह सिलसिला शुरू रखकर तीन साल के बाद वंदनीय दादा जी ने साधना सम्मेलन में भक्तों से पूछा कि "इस प्रकार हर साल साधना सम्मेलन लेने का जो नया Trend आरम्भ किया है उसका शास्त्रीय रूप से कारण क्या है? इसके लिए छुट्टी लेकर खर्चा करके आप सभी को आना पड़ता है, इससे क्या प्राप्ति होने वाली है? इससे पहले पच्चीस साल आपकी परेशानियाँ दूर करने के लिए भी मैंने कभी आपको पूना भी नहीं बुलाया तो मैं खुद मुम्बई, काहाड, गोवा, दिल्ली इत्यादी सभी जगह जाकर आपकी सेवा की तो अभी यह साधना सम्मेलन, जो कि ऐच्छिक तौर पर रखा जाता है उसका Scientific reason क्या है?"

आगे सम्मेलन लेते समय वंदनीय दादाजी ने अनेक कारण बताये, उन में से कुछ कारण पर अभ्यास हम करने की कोशीश करते है।

अ. दादा-बाबा की दुआ

आज हमें कोई भी छोटा सुख प्राप्त होता है तो कहते हैं कि बाबा की दुआ है। बच्चा पास हुआ, उसे एडमिशन मिली, नौकरी में बढौत्री मिली, धंधे में मुनाफा हुआ, आदि अनेक चीजों पर हम कहते रहते है कि दादा बाबा की दुआ है। उस पर वंदनाय दादा ने कहा कि "ये बाबा की दुआ, "बाबा की दुआ" कहकर नाचना बंद कर दो। यह जो दो पल का सुख आपको प्राप्त हुआ है उसे हासिलकर देने के लिए मैंने मार्ग स्थापित नहीं किया। मेरे अनेक जन्मों की तपश्चर्या इस कार्य में लगी है। प्राप्त की बाबा की दुआ इतनी सस्ती नहीं है जो आपके मामूली सुख में खत्म हो जाये। अभी तक आपने बाबा की दुआ धारण ही नहीं की है। वह दुआ इतनी कीमती है, जिससे प्रति सृष्टि निर्माण करने की ताकत है। वह धारण करके आप अपना ऐसा विकास कर लें सकते हैं, जो जन्म जन्म साथ रहने वाला है। उसी दुआ का अनुभव लेना, उसे धारण करना और कार्यान्वित करने की आदत अपने माध्यम को डालना जिससे वह दुआ हमारे साथ हमेशा रहे यह प्राप्ति कर देने के लिए यह साधना सम्मेलन आयोजित होते है।

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

ब. जन्म का कारण / स्थित्यंतर

आत्मा को जन्म प्राप्ति होने के तीन प्रमुख कारण होते है।

❋ कर्म के अनुसार जन्म (इच्छा/वासना)

❋ कार्य के लिये जन्म

❋ कारण के लिए जन्म

१. कर्म के अनुसार जन्म

हम जैसे लगभग 90 प्रतिशत मानवों का जन्म आज पहली अवस्था में – कर्म के अनुसार जन्म – इस अवस्था में है। इस अवस्था में आत्मा कर्म की पूर्तता करने के लिए इहलोक में जन्म प्राप्त करता है। इस जन्म में मानव सात वलयों में अपना जीवन व्यतित करता है, 1. आत्मिक वलय 2. देहिक वलय और उस पर पाँच ऋणानुबंधों के पांच वलय होते हैं (जन्म कर्म, जन्म जन्मान्तर, मातृ–पितृ, इतरेजन, देवादिक) उस व्यक्ति को मिलने वाला सुख–शांति–समाधान इत्यादि उसने साथ में लाये हुए कर्म के साथ–साथ इन सात वलयों की अनुकूलता–प्रतिकूलता पर काफी हद तक निर्भर होता है।

हर दिन कर्म की और इन सात वलयों की स्थिति अलग–अलग होने के कारण इस व्यक्ति का मानसिक संतुलन (Mood) हर दिन अलग–अलग होता है (बहुत Fluctuate करता है।)

यह कर्माधिन अवस्था है। इस अवस्था में कर्म वलय ऋणानुबंधों के वलय में मिल जाता है और उसकी व्याप्ती एक फुट से 150 मील तक ज्यादा से ज्यादा रह सकती है।

२. कार्य के लिए जन्म

इस अवस्था में आज दुनिया में लगभग दस प्रतिशत लोग जन्म प्राप्ति कर रहे है। कार्य के लिए जब जन्म प्राप्त होता है तो वह आत्मा/वह व्यक्ति सज्ञान होने के बाद समाज के लिए खुद का जीवन व्यतीत करता है। समाज की/निसर्ग की उन्नत्ति हो, यही उनके जीवन का ध्येय होता है अच्छे डॉक्टर, अच्छे वकील, शिक्षक, शास्त्रज्ञ, समाज सेवक, संत पुरूष, आदि व्यक्ति जो स्वार्थ बुद्धी से समाज का कल्याण करने के लिए तकलिफे उठाकर भी कार्यरत होते है। कई लोग अपनी परिवार की फिक्र छोड़ समाज के लिए खुद का जीवन दान देते है। उसी में उनको सुख–शांति–समाधान प्राप्त होता है।

अपने अपने कर्त्तव्य पूर्ति करके समाज के लिए काम करना यह जन्म प्राप्ति की उन्नत अवस्था है, जिसे कार्य परत्वे जन्म कहते है।।

इस अवस्था में आत्मा के साथ सिर्फ तीन वलय होते है। देहिक वलय, आत्मिक वलय और गुरू वलय (या ईश्वरीय शक्ति का वलय)। इस अवस्था में गुरूशक्ति या ईश्वरीय शक्ति कार्यान्वित होकर जीवन को सार्थक करती है।

आज हम सभी जब साधना सम्मेलन के लिए जाते है, तब अपने माध्यम से गुरूशक्ति कार्यान्वित करने का कार्य सामुहिक ऊँकार साधना, आरती साधना और मुलाकात साधना द्वारा गुरूकृपाशीर्वाद से कार्यान्वित होता है। इन साधनों से गुरू अपना गुरूकार्य तो कर लेते है और उसी के साथ हम जैसे कर्म की अवस्था में जन्म लिये मानवों को कार्य अवस्था का अनुभव लाभ देते है, जिससे हमें आंतरीक समाधान महहूस होता है और उसी का अनुभव लेने के लिए हमारी आत्मा हमें सम्मेलन में खींच ले आती है। तब जो खर्चा होता है उसका हिसाब हम नहीं रखते बाकि छोटे–छोटे खर्चे करते समय सोचने वाले व्यक्ति सेमिनार के लिए हमेशा तैयार रहते है।

इस कार्य अवस्था की तरतूद (Provision) श्री गुरू ने हम सभी के माध्यम में की है, जिसकी पहचान होकर उसे विकसित करने के लिए हमें अपनी आदते बदलनी पड़ेगी और गुरूकृपाशीर्वाद से वह धीरे–धीरे जरूरी बदलने वाली है। यही दादा–बाबा की दुआ है जिससे निसर्ग का नियम बदलकर हमें प्राप्त हुए इसी जन्म में कर्म जन्म से उन्नत अवस्था में याने कार्य जन्म या उससे भी आगे के कारण जन्म की तरतूद हम दादा बाबा की दुआ से इसी जन्म में प्राप्त कर सकते है।

कार्य अवस्था कार्यान्वित होने के लिए उस अवस्था का अनुभव देने के लिए हमारी आत्मा के आसपास सिर्फ तीन वलय होने जरूरी होते हैं इसलिए हमें किसी एक जगह जो अपने ऋणानुबंधों की वलय की व्याप्ती से/कर्म वलय के आकार से दूर हो (150 Miles से ज्यादा) वहाँ बलुाया जाता है। क्योंकि ऋणानुबंध के 5 वलय निकालकर ही गुरूवलय की धारणा करके कार्य अवस्था से गुरू कार्य कार्यान्वित करना साधना सम्मेलन का उद्देश्य है।

इसलिये सेमिनार को आते समय जब तक हम इन वलयों को पार नहीं करते तब तक ऐसा महसूस होता है कि क्या मैं इस सेमिनार में जाकर ठीक कर रहा हूँ? एक बार वह वलय पार हो गया और सेमिनार के पहले दिन जब गुरूवलय में आ गये तो अच्छा लगता है और उसी प्रकार का अनुभव सेमिनार से जाते समय होता है, तब यहाँ से निकलते हुए दुःख होता है क्योंकि आत्मा को गुरूवलय में और कार्य अवस्था में समाधान मिलता है। जब हम यहाँ से निकलकर वापस अपने घर के 100–125 मील पर जाते है तब कर्मवलय में जाने लगते है। वह प्रवास (Travel) करते समय कर्म और ऋणानुबंध वलय बढ़ने की वजह से आँखें बंद होने लगती है, नींद आती है।

क्या यह अनुभव आपने लिया है?

इसी प्रकार सेमिनार में यह मार्गदर्शन किया जाता है कि कामकाज का कोई भी प्रश्न सेवकों से नहीं पूछना हैं इसका कारण यह है कि श्री गुरू जब हमें अपने कर्म के ऋणानुबंधों के वलय से अगली अवस्था का लाभ देने के लिए बाहर निकलते है तब अपना कामकाज का प्रश्न उन्हें कर्म के और ऋणानुबंधों के वलयों को आह्वानित करता है जिससे कार्य अवस्था और गुरू कार्य इन दोनों में बाधा (अड़चन) आती है।

3. कारण अवस्था में जन्म

इस अवस्था में लाखों–करोंड़ो में एकाद आत्मा को कारण अवस्था का जन्म प्राप्त होता है, जिसमें ईश्वरीय अवतार कार्य किया जाता है, जिसके जन्म का कारण ईश्वर निश्चित करता है और जिससे इस पूरी सृष्टि का संतुलन Restore होता है। इस अवस्था का जन्म मतलब हमारे श्री गुरू वंदनीय दादा का जन्म।

वंदनीय दादा ने कहा था कि, "मैंने अनेक जन्म भगवान से झगड़कर यह गुरूमार्ग और गुरूकृपाशीर्वाद प्राप्त किया है, वह दुनिया को सीर्फ ऐहिक सुख देने के लिए नहीं तो जो मानव आज जन्म की कर्म अवस्था में अटक गया है उसे परमार्थिक उच्चावस्था मतलब कार्य–कारण और महाकारण इन अवस्था प्राप्त कर देने के लिए है। ऐहिक सुख और पारमार्थिक सुख में अंतर क्या है? तो ऐहिक सुख मिला तो उसे खुद भी देख सकते हैं और दूसरों को भी दिखा सकते है। (Pin to piano) मतलब नौकरी–धन्धे में पैसा ज्यादा मिलने लगा तो अपना रहन सहन (Living Standard) बदलता है, स्कूटर बेचकर मोटरकार आती है। लेकिन पारमार्थिक सुख जब प्राप्त होता है तब वह दुनिया को नहीं दिखता और कई बार हमें खुद को भी नहीं समझता। उसे महसूस करना होता है। प्राथमिक रूप से जो बदलाव आता है, वह इस प्रकार है कि गुरूमार्ग में आने से पहले अगर हम दूसरों को बुरा–भला बोलते थे, कोसते थे वह अब हम खुद का बर्ताव ध्यान से देखने की कोशिश करने लगते है। मतलब पारमार्थिक विकास की शुरूआत हो गई।

आगे वंदनिय दादाजी ने ऐसे कहा कि, "आप यह मत समझना की अगर आप कार्यकेन्द्र पर आते हो और साधना सम्मेलन में आ गये तो अगला जन्म कार्य जन्म होने वाला है। इस कार्य का लाभ लेना मतलब आपके विकास का काम आरम्भ हो गया, फिर दीक्षाओं की धारण होकर विकास होने लगेगा। याने अब आप आगे की कार्य जनम की अवस्था के लिए पात्र (Eligible) हो गये। मतलब कॉलेज में एडमिशन मिल गई, लेकिन ग्रेज्युऐशन डिग्री नहीं मिली, उसके लिए कार्य पूरा करना पड़ेगा, पढ़ाई करनी पड़ेगी। यह नहीं किया तो फेल हो जायेगें और डिग्री भी नहीं मिलेगी। उसी प्रकार हम सभी कार्य जन्म के लिये गुरूकृपा के पात्र हो गये। अब उस अवस्था तक पहुँचने के लिए नियमित ऊँकार साधना, आरती और मुलाकात साधना का लाभ लेना और परमार्थ प्रश्नावली में बताया हुआ आचरण कार्य पर और गुरू पर दृढ़ विश्वास, श्रद्धा और सबुरी यह चीजे मायने रखती है।

४. जिंदगी में भूमी का महत्व *(Place/Area)*

मानवीय जीवन चार भूमि पर आधारित होता है। जन्म भूमि, कर्म भूमि, कार्यभूमि और श्मशान भूमि। पहली और आखरी भूमी मतलब जन्मभूमि और श्मशान भूमि अपने हाथ में नहीं होती। बाकी दो मतलब कर्मभूमि, और कार्य भूमि बहुत महत्वपूर्ण होती है। किसी के लिए वह दोनों एक ही हो सकती है या किसी के लिए अलग–अलग। कर्मभूमि मतलब कर्म व्यक्ति होने के लिए जो अनुकूल होती है, याने जहाँ शिक्षा, पढ़ाई या नौकरी, धंधा सफल होता है।

कार्यभूमि याने जहाँ समाज का कार्य या ईश्वरीय कार्य हमारे माध्यम से होने के लिऐ अनुकूलता है। मानव ने अपना जन्म कार्य अवस्था में प्राप्त करने के बावजूद उसे कार्य अवस्था कार्यान्वित करने के लिए कार्यभूमि को साकार करना पड़ता है। इसी रूप से हमें समाज में दिखाई देता है कि अच्छे समाज सेवक, अच्छे डॉक्टर काफी मेहनत करने के बाद भी यशस्वी नहीं होते।

आध्यात्मिक मार्ग में वंदनीय दादा जी ने कहा था कि गुरूमार्ग का सेवक बनने के लिए उसे कार्यभूमि साकार कर देना अत्यंत आवश्यक है, इसलिए जब सम्मेलन के लिए, सभी को अपनी अपनी कर्मभूमि से दूर बुलाया जाता है और किसी एक जगह जब कार्य अवस्था का लाभ कर देते समय उसी साधना से कार्यभूमि सिद्ध करने का लाभ होता है। धीरे–धीरे नियमित रूप से ऊँकार साधना करके वह अपनी कर्मभूमि को गुरू चरणों में कर्मभूमि बनाता है। जिस जगह सेमिनार लिया जाता है, वहाँ के लोग बाहर से आने वाले लोगें की जो व्यवस्था करते है उसमें से उनकी कार्यभूमि गुरूकृपा से सिद्ध होती है। अगर आगे जीवन में गुरूकार्य में शामिल होना है तो हर साल कम से कम एक साधना सम्मेलन में अवश्य भाग लेना चाहिए।

५. *देहिक-आत्मिक अवस्था अनुकूलता*

साधना सममेलन में जाने के बारे में कई बार हम ऐसे सोचते है कि, इस साल बहुत काम है तो अगले साल जायेंगे। या फिर ऐसा सोचते है कि 5–6 साल जाने दो, थोड़ा जिन्दगी में सेट हो जाते है फिर सेमिनार में जायेंगे। या फिर, रिटायर्ड होने के बाद तो यही करना है, अब पैसा कमाते है, फिर 80 साल के बाद जायेंगे सेमिनार में।

वंदनीय दादाजी ने कहा था कि हर पल अपनी देहिक और आत्मिक अवस्था बदलती रहती है। काफी हद तक वह बदलाव निसर्ग के हिसाब से होता है। जैसे कोई लड़का बड़ा होने लगता है तो उसे दाढ़ी–मूछ आ जाती है, तब उस लड़के को अगर वह दाढी पसंद नहीं तो भी वह आने से नहीं रूकती क्योंकि वह देहिक अवस्था का एक बदलाव हैं। इसी प्रकार के अनेक बदलाव हमारे देहिक अवस्था में निसर्ग के हिसाब से होते रहते है, जिस पर हमारा नियंत्रण नहीं होता। उसी प्रकार आत्मिक अवस्था में भी बदलाव होते रहते हैं। आज पूरी दुनिया में वंदनिय दादा ने स्थापन किये हुए इस ईश्वरीय कार्य में उन्होंने हमें शामिल कर लिया है मतलब आज हमारी देहिक, आत्मिक अवस्था पारमर्थिक उन्नत्ति प्राप्त कर गुरू कार्य में शामिल होने के लिए अनुकूल है लेकिन हमारी बुद्धी अविकसीत होने से उसे इस अवस्था की पहचान नहीं हो रही। 5–6 साल के बाद या रिटायर्ड होने तक शायद अपनी यह अवस्था बदल जाये। तब कितनी भी इच्छा और वक्त होने पर भी हम इस कार्य में शायद शामिल न हो पाये। जैसे तेज भागना बुढ़े होने के बाद मुमकिन नहीं होता, उसके लिए इच्छा बहुत है लेकिन शरीर साथ नहीं देता।

इसलिए आज के वक्त को समझकर आज की दुआ प्राप्त कर खुद का विकास कर लेना यह हर एक मानव का प्रथम कर्त्तव्य है। इस साल का वार्षिक साधना सम्मेलन अक्टूबर महीने में जयपुर में होने वाला है। आप सभी अपना समय निकालकर वंदनीय दादा और परम् पूज्यनिय बाबा की दुआ से पारमार्थिक विकास प्राप्त करे ले, यही उनके चरणों में प्रार्थना है।

।। शुभं भवतु ।।

जनम जनम का सेवक

"साई निकेतन"

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@hotmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible